लेपालकपन

फ्रेंकलीन द्वारा बाइबलीय शब्दों का अध्ययन

यहाँ एक अध्ययन है जिसमें मूल यूनानी शब्दों के सही और वास्तविक अर्थों को प्राप्त करने और उनके संभावित वैकल्पिक अनुवाद पर विचार करने का एक प्रयास दिया गया है।

क्योंकि यह अध्ययन हमारी सोच को चुनौती देगा, इस कारण 14 नवम्बर, 2009 के वाल स्ट्रीट जर्नल से लिया गया यह कथन हमें इस अध्ययन के लिए तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण और सही हैं।

"अधिकांश समय, हमारा दिमाग जबरदस्ती हाँ में हाँ मिलाने वाले व्यक्ति के समान है जो वही कहता है जिस पर आप विश्वास करना चाहते हैं। मनोवैज्ञानिक इसे "कन्फर्मेशन बायस" (अपने ही विश्वास की पुष्टि करने का झुकाव)" कहते हैं।

हाल ही में लगभग 8000 प्रतिभागियों के साथ हुए मनोवैज्ञानिक शोध से यह निष्कर्ष निकला कि लोग ऐसे साक्ष्य पर विचार करने की तुलना में जहाँ उनके विश्वास की पुष्टि होती है, दुगनी बार ऐसी जानकारी चाहते हैं जिसमें उनके विश्वास की जिसे वो पहले से ही मान रहे हैं, पुष्टि होती हैं।

एटलांटा के एमोरी यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक के अनुसार: "अपने ध्यान को ऐसे तथ्य की ओर आकर्षित करना जो हमारी परिकल्पना के अनुसार है हमारे लिए आसान है, बजाय इसके कि हम ऐसे तथ्य ढूंढें जो उसको नकार सकें।"

यदि हम पवित्र शास्त्र अध्ययन करने के विषय में इन दी गई बातों को पूरी ईमानदारी से देखें तो हम कहेंगे, "हाँ, मेरे साथ भी ऐसा ही है।"

इसलिए, सत्य की खोज में, खींच तान करते हुए, और विकल्प अनुवाद पर गंभीरता से विचार करते हुए और बिना अपने विश्वास को पुष्टि करने के झुकाव के, आईये हम इस अध्ययन पर विचार करें।

लेपालकपन का अर्थ है कि कोई बच्चा जिसका जन्म किसी दुसरे परिवार में हुआ और क़ानूनी तौर से वह अपनी संतान बन जाता है और अपनी संतान की तरह उसकी परवरिश होती है।

बाइबल में 5 बार इसका ज़िक्र है :

रोमियों 8:15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु **लेपालकपन** (स्ट्रोंग 5206) की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

रोमियों 8:23 और न केवल यह, परन्तु स्वयं हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते हैं और अपने **लेपालक पुत्र** (5206) होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

रोमियों 9:4 वे इस्राएली हैं, और **लेपालकपन** (5206) का अधिकार, महिमा, वाचाएं, व्यवस्था, उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं।

गलातियों 4:5 कि जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन्हें मूल्य चुकाकर छुड़ा ले, और हम को **लेपालक पुत्र** (5206) होने का अधिकार प्राप्त हो।

इफिसियों 1:5 और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके **लेपालक पुत्र** (5206) हों।

पवित्र शास्त्र में लेपलाकपन का प्रयोग हमेशा "पुत्र" के लिए हुआ है, 'बच्चे' के लिए नहीं।

ऊपर दिए गए भागों में "लेपालक" का जब हम मूल यूनानी अर्थ देखते हैं, तो हमें दूसरा अर्थ मिलता है।

स्ट्रोंग शब्द #5206, **हुइयोथेसिया** (υι'οθεσίας) दो मिश्रित शब्दों से बना है:

#5207 (υι'ος - पुत्र) और

#5087 (τιθέμε - स्थान प्राप्त करना) से बना है।

इसका अर्थ निकलता है : **पुत्र का स्थान** प्राप्त करना (प्रतीकात्मक रूप से, परमेश्वर से सम्बंधित **पुत्रत्व)** :

बच्चे (παιδίον) के स्थान पर विशेष तौर पर **पुत्र** (υι'ος) का इस्तेमाल किया गया है।

बाद में **"पुत्र का स्थान प्राप्त करना"** एक यहूदी परम्परा हो गई जब **अपने बेटे** की पहचान, एक बच्चे की तरह नहीं बल्कि पुत्र के रूप में की जाती थी।

मुझे (υι'οθεσίας) "लेपलाकपन" के रूप में अनुवाद करने पर आपत्ति है। मेरा मानना है कि जिस तरह इस्राएल ने इसे समझा और "बार मित्सवाह" जैसी रस्म विकसित हुई, उसी तरह यह शब्द समझा जाना चाहिए।

लेपालकपन का अनुवाद मूल लेखों के अंग्रेज़ी और पाश्चात्य अनुवादों से आया है।

यहूदियों की "बार मित्सवाह" की रस्म तब होती है जब कोई परिवार अपने 13 साल के पुत्र को अपनी नैतिक और धार्मिक कार्यकलापों के लिए वयस्क और **जिम्मेवार** मानते हैं। वह अब बच्चा नहीं है, बल्कि **पुत्र** है।

परिवार में बच्चा हमेशा से था, और अब वह उस उम्र पर पहुँच गया जब उसे "पुत्र" के रूप में पहचाना जाए, परिपक्व, एक वयस्क की तरह।

यूनानी शब्द का अक्षरशः अर्थ है :

- पुत्र का स्थान प्राप्त करना
- वयस्क पुत्र होना

इस शाब्दिक अनुवाद को स्वीकार करने पर इसका अर्थ है जिन्होंने विश्वास किया या जो विश्वासी बनें:

- वे उस तरह से लेपालक नहीं हुए जैसे आज हम इस शब्द के अर्थ को समझते हैं।
- वे कभी शैतान की संतान नहीं थे (यूहन्ना 8:44)
- लेकिन वे हमेशा से परमेश्वर की "संतान" थे और हमें "पुत्र" (पिता की इच्छा को जानने की उम्र) का स्थान तब प्राप्त हुआ जब हमने विश्वास किया और "लेपालक की आत्मा", या और सही रूप में कहें तो "पुत्रत्व की आत्मा" को ग्रहण करके आत्मा से जन्मे गए।

क्या पवित्र शास्त्र इस विषय का समर्थन करता है

अपने अनुग्रह के द्वारा उसने हमें अपना होने के लिए जगत की सृष्टि से भी पहले चुना।

इफिसियों 1:3-4 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। **उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया** कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

अनंतता में, सृष्टि से पहले, बिना किसी प्रकार की किसी शर्त के, इससे पहले कि आप कुछ अच्छा या कुछ बुरा करते, उसकी सर्वोच्च इच्छा और अनुग्रह में .... उसने आपको **अपना होने के लिए चुना**।

वह आपसे प्रेम करता है आप चुने हुए हैं ! आप विशेष हैं !

अपने अनुग्रह से, उसने यह निर्धारित किया कि कौन उसकी संतान होंगे।

इफिसियों 1:5-6 और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये **पहले से ठहराया** कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके **लेपालक (स्थान प्राप्त) पुत्र** हों, कि **उसके उस अनुग्रह की महिमा** की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में **सेंत-मेंत** दिया।

- **उसकी संतान होना पूर्व निर्धारित**

पहले से ठहराया (यूनानी - प्रोरिज़ो) का अर्थ: कुछ वास्तव में होने से पहले निर्धारण, निर्णय या स्थापित करना। पहले से ठहराया, पहले से ही नियुक्त।

- **"प्रिय में सेंत-मेंत दिया"**

"**सेंत-मेंत** दिया" के मूल यूनानी शब्द का अर्थ है : "विशेष सम्मान से आशीषित या अनुग्रहित करना"। यह शब्द केवल एक और बार इस्तेमाल हुआ है जिसका अनुवाद "अनुग्रह" हुआ है : लूका 1:28 स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, "आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का **अनुग्रह हुआ** है! प्रभु तेरे साथ है!"

प्रभु परमेश्वर ने अनंतता से, सृष्टि के पहले से ही यह निर्धारित किया था कि कौन उसकी संतान होंगें। और उस समय उसने उन सबके नाम "मेमने की जीवन की पुस्तक में लिख दिए"। लूका 10:20; इब्रानियों 12:23; प्रकाशितवाक्य 13:8; 21:27

गलातियों 3:26 क्योंकि **तुम सब उस विश्वास के द्वारा** जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की **सन्तान** (ʻυιοι) **हो।**

- जब हम विश्वास करते हैं - हमें उसके परिवार में पुत्रों के रूप में स्थान प्राप्त होता है, अब बच्चे नहीं रहे। और अब पवित्र आत्मा के साथ, जो हम में है, हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम वयस्क और जिम्मेदार लोगों के समान अपने नैतिक और धार्मिक **कर्तव्यों** के प्रति समझदारी से कार्य करें।

यूहन्ना 12:36 जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर **विश्वास करो** ताकि तुम ज्योति की **सन्तान** (पुत्र) **बनो**।"

- इस पद में यीशु स्पष्ट रीति से कहता है कि **जब हम विश्वास करते हैं** तो हम **पुत्र बन जाते हैं**।
- मूल यूनानी भाषा में यहाँ संतान **नहीं** बल्कि "पुत्र" है।

रोमियों 8:14-15 इसलिये कि **जितने लोग** परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। (15) क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु **लेपालकपन की आत्मा** मिली है, जिससे हम 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारते हैं।

- **जब हम विश्वास करते हैं** तब हम पवित्र आत्मा को **अपने में ग्रहण करते** हैं - पुत्र के रूप में "लेपालकपन का आत्मा"। परमेश्वर के अनुसार उस समय हम बच्चे नहीं रह जाते, बड़े हो जाते हैं, पुत्र ठहरते हैं।

गलातियों 3:29 और यदि तुम मसीह **के हो** (विश्वास करने को नहीं कहता) **तो** अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस (यूनानी - स्पर्मा) भी हो।

गलातियों 4:1 मैं यह कहता हूँ कि **वारिस जब तक बालक (νήπιος) है**, यद्यपि सब वस्तुओं का **स्वामी है,** तौभी उसमें और **दास** में कोई भेद नहीं।

- अपने जन्म से पहले आप अब्राहम के थे - **उसके वंशज** - चुने हुए - पूर्व नियोजित - **जन्म से उसकी संतान**। परंतु हम पाप की बंधुवाई में **दास** की तरह जी रहे थे, फिर भी हम उसके थे और सब वस्तुओं के **स्वामी** थे और हमें यह मालूम नहीं था।

- "एक बालक" विश्वासी नहीं, क्योंकि **विश्वास करने पर** आप **पुत्र**, आत्मिक रीति से जवान वयस्क होते हैं और पवित्र आत्मा आप में वास करके आपको सिखाता है, समझ देता है तथा जो कुछ भी आप करते हैं उसको दिशा निर्देशित करता है।

- "एक बालक" दास की तरह, यह नहीं पहचानता कि सब कुछ उसका है, वह अपनी भविष्य की जिम्मेवारियों को भी नहीं जानता, अभी के लिए वह केवल आज्ञा मानता है।

(पद 2) परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के **वश में** रहता है। (3) **वैसे ही हम भी, जब बालक थे,**

- जब हम बालक थे, अपने विश्वास करने से पहले जब हमें **संरक्षकों** और प्रबंधकों के आधीन **रखा** हुआ था। क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं; **जो उद्धार पानेवालों के लिये** सेवा करने को भेजी जाती हैं? इब्रानियों 1:14

(पद 2 जारी)

तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर **दास** बने हुए थे। (4) परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, (5) ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर **छुड़ा** ले (एक निश्चित मूल्य चुकाकर स्वामित्व **पुन:** प्राप्त करना), और **हमें लेपालक होने का पद मिले**। (υιοθεσίαν - पुत्र का स्थान देना) (6) **इसलिए कि तुम पुत्र हो**, परमेश्वर ने **अपने पुत्र के आत्मा को**, जो 'हे अब्बा! हे पिता!' (हमने जाना कि हमारा पिता कौन है) कह कर पुकारता है, **हमारे हृदयों में भेजा** है। (यह तब हुआ जब हमने नया जन्म पाया) (7) इसलिये तू अब दास नहीं (अर्थात बालक, जैसा पद 1 में लिखा है), **परन्तु पुत्र है**; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

गलातियों 4:22-26 यह लिखा है कि अब्राहम के **दो पुत्र** हुए; **एक दासी से** और **एक स्वतंत्र स्त्री से**। (23) परन्तु जो दासी से हुआ, **वह शारीरिक रीति से जन्मा**, और **जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।** (24) इसमें एक दृष्टान्त है: ये स्त्रियां मानो दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पर्वत की, जिस से **केवल दास ही उत्पन्न होते** हैं - और वह हाजिरा है।(25) और हाजिरा मानो अरब का सीनै पर्वत है, जो वर्तमान यरूशलेम के समान है, क्योंकि वह अपनी सन्तानों सहित दासत्व में है। (26) **परन्तु ऊपर** (ανο) **की यरूशलेम स्वतन्त्र है, और वह <u>हमारी</u> माता है।**

- अत: **यह न सिर्फ** अब्राहम पर **निर्भर था** जो पिता था (रोमियों 4:16), **लेकिन माता पर भी जो** - **ऊपर** (ανω) **की यरूशलेम है, "ऊपर से उत्पन्न" हुआ।**
- यह स्पष्ट रीति से यह बताती है कि इस पृथ्वी पर **दो तरह** के लोग हैं। दो अलग-अलग मूल, स्रोत, अलग अलग माताओं से और जिनकी अलग अलग मंजिल हैं।
- यूनानी शब्द जिसका अनुवाद **"भाई"** होता है, उसका अक्षरश: अर्थ **"एक ही गर्भ से"** है। सुसमाचारों में यीशु के भाइयों का ज़िक्र है जो मरियम से उत्पन्न हुए। परंतु लूका 8:21 में: यीशु ने कहा, "मेरी माता और मेरे **भाई** ये ही है, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।" गलातियों 4:26 ऊपर की यरूशलेम ... हमारी माता है।

गलातियों 4:28 और हे भाइयो, तुम **इसहाक के समान** प्रतिज्ञा की सन्तान हो।

- शारीर की संतान नहीं, बल्कि प्रतिज्ञा की संतान।
- "इसहाक के समान" का अर्थ स्वाभाविक जन्म से है, जैसा इसहाक का स्वाभाविक जन्म था।

- और "इसहाक के समान" परमेश्वर ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले से ही चुन लिया था (इफि 1:14) और यह निश्चित किया कि हम इस जगत में "इसहाक के समान" जन्म लें (स्वाभाविक या पहला जन्म), । उसकी संतान जन्में, चुने हुए, और प्रतिज्ञात।
- और जब हम मानते हैं - पवित्र आत्मा हम में आता है और हम **पुत्र के रूप में स्थान प्राप्त करते हैं**, और अब बच्चे नहीं रहते और न ही अपने को "दास" के रूप में देखते हैं क्योंकि हमें स्वतंत्र किए गए हैं।

प्रभु परमेश्वर पिता है - सामर्थ्य में असीमित।

उसने अपने परिवार की योजना आरम्भ से ही की थी। सृष्टि के पहले से वह अपने बच्चों को जानता था, वे कौन होंगे, और उसने उनके पहले या स्वाभाविक जन्म को ठहराया। इसमें कोई संयोग नहीं है

- यह स्वाभाविक जन्म है

रोमियों 4:16-17 " ... कि **अनुग्रह** की रीति पर हो, कि **प्रतिज्ञा सब वंश** (σπερματι - स्पर्माटी - बीज) **के लिये दृढ़ हो,** न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है, वरन उन के लिये भी जो इब्राहीम के **समान विश्वास वाले हैं: वही तो हम सब का पिता है।** ("हम सब का" से स्पष्ट है कि इसका अर्थ प्रतिज्ञा की सन्तान हैं, परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित)

परमेश्वर ने अब्राहम से एक परिवार की प्रतिज्ञा की।

रोमियों 9:6-8 परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं, **वे सब इसरायली नहीं।** (7) और न अब्राहम के वंश (σπέρμα - बीज) होने के कारण सब उस की सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा। (8) **अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं**, परन्तु **प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं।**

- **शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं**, का अर्थ : स्वाभाविक जन्म (शरीर से) किसी व्यक्ति को परमेश्वर की संतान बनने के योग्य नहीं बनाता परन्तु **प्रतिज्ञा के सन्तान** वंश गिने जाते हैं

गलातियों 4:28 हे भाइयो, **हम** इसहाक के समान **प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।**

- यहाँ पर **स्वाभाविक जन्म** के बारे में बोला जा रहा है।
- वह अपने परिवार में **स्वाभाविक जन्म** का आदेश देता और उसका पूर्व निर्धारण करता है।
- जैसा उसने इसहाक के साथ किया था।
- यूहन्ना 1:13 **वे** न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु **परमेश्वर से** उत्पन्न हुए हैं।
    - न तो लहू से - स्वाभाविक जन्म
    - न शरीर की इच्छा से - स्वाभाविक जन्म
    - न मनुष्य की इच्छा से - स्वाभाविक जन्म
    - परन्तु **परमेश्वर से उत्पन्न** - सन्दर्भ के अनुकूल **स्वाभाविक जन्म** और स्थापित अनुवाद रुपरेखा

रोमियों 9:9-26 क्योंकि **प्रतिज्ञा** का वचन यह है, ... सारा के पुत्र होगा। और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी ... और अभी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्हों ने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छुटके का दास होगा। (12) इसलिये कि **परमेश्वर की मनसा** जो उसके **चुन** लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु **बुलानेवाले पर बनी** रहे। (13) जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना।। सो **वह जिस पर चाहता है**, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है। ... और **दया के बरतनों** पर जिन्हें उस ने **महिमा के लिये पहिले से तैयार** किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की? अर्थात् **हम** पर जिन्हें उस ने न केवल यहूदियों में से वरन अन्यजातियों में से भी बुलाया।

रोमियों 8:29 क्योंकि जिन्हें उस ने **पहले से जान** लिया है उन्हें **पहले से** ठहराया भी है (पूर्व निर्धारित) कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि **वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे**।

> **पहलौठा** - प्रोटोस (स्थान या महत्व में सबसे पहले) और टिक्टो (पिता के रूप में बीज उत्पन्न करना)। इसका अर्थ - पहले स्थान में जन्म लेना, सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण स्थान पर।

यिर्मयाह 1:5 **गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया**, और **उत्पन्न होने से पहले ही मैं ने तुझे अभिषेक किया;** मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया।

ऊपर दिए गए वचन हमें साफ़ साफ़ बताते हैं कि कुछ लोगों के स्वाभाविक जन्म "परमेश्वर से" - या - "ऊपर से जन्में" होते हैं।

जिन्हें परमेश्वर ने "जगत की सृष्टि से पहले" से चुना हुआ कहा है, उन्हें ही "**ऊपर से**" जन्मा भी कहा है। यहाँ पर **स्वाभाविक जन्म** का ज़िक्र है।

यूहन्ना 3:3 यीशु ने उस को उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई **नये सिरे** से न जन्में (ανοθεν - **ऊपर से**) तो परमेश्वर का राज्य **देख** (ιδείν अक्षरश: - देखना, या प्रतीकात्मक रूप से - समझना) नहीं सकता। वह "प्रवेश" नहीं कहता।

- केवल वही जो *"ऊपर से जन्मा है"* वही आत्मिक सच्चाइयों को देखेगा और/या **समझेगा** और **विश्वास करने के बिंदु** पर पहुँचेगा।
- यूनानी शब्द "ανοθεν", का अनुवाद नए सिरे से जन्मा हुआ है, और इसका सही अनुवाद "**ऊपर से जन्मा होना चाहिए**, जैसे इन पदों में है।

  यूहन्ना 3:31 **जो ऊपर से आता है**, वह सर्वोत्तम है,

  यूहन्ना 19:11 यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे **ऊपर** से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता;

  याकूब 1:17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान **ऊपर** ही से है,

  याकूब 3:15 यह ज्ञान वह नहीं, जो **ऊपर** से उतरता है वरन सांसारिक ....है।

  याकूब 3:17 पर जो ज्ञान **ऊपर** से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है

  --- और विस्तृत अध्ययन के लिए "ऊपर से जन्मा" के नोट्स देखें ---

नीचे ऐसे कई वचनों में से कुछ वचन दिए गए हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि सभी लोग उसके अपने नहीं हैं। परमेश्वर के हमेशा से चुने हुए लोग रहे हैं।

यशायाह 45:4 अपने दास याकूब और **अपने चुने हुए इस्राएल** के निमित्त मैं ने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं ने तुझे यह पदवी दी है।

आमोस 3:1-2 हे इस्राएलियो, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में अर्थात् उस सारे कुल के विषय में कहा है जिन्हें मैं मिस्र देश से लाया हूं: (2) **पृथ्वी के सारे कुलों** (रिश्तेदार, सभी सम्बन्धियों) **में से मैंने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है,** इस कारण मैं तुम्हारे सारे अधर्म के कामों का दण्ड दूंगा।।

- उसने सम्पूर्ण परिवार के लोगों को नहीं चुना जैसा उसने इस्राएल के साथ किया था। अन्य जातियाँ सम्बंधित नहीं थीं।

    1 पतरस 2:10 तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर ही प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।।

- कुलुस्सियों 1:2 मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से (अन्य जाति) में रहते हैं ... (3:12) इसलिये **परमेश्वर के चुने हुओं के समान**

- 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 .... **परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया**; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ।

लूका 19:10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र **खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है**। (खोया - पहले वह अपना होना चाहिए)

यूहन्ना 6:37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह **सब मेरे पास आएगा**, उसे मैं कभी न निकालूंगा।

यूहन्ना 6:38-40 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, **बल्कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये** स्वर्ग से उतरा हूं। (39) और **मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है** कि वह **सब जो उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊं** परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं।

- अगर "सब" पिता की इच्छा है, तो वह सब होगा, और कुछ भी खोया न होगा।

यूहन्ना 6:65 और उस ने कहा, इसी लिये मैं ने तुम से कहा था कि **जब तक किसी को पिता की ओर यह वरदान न दिया जाए तक तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।**

- जिन लोगों को वह चुनता है उन्हें ही "वरदान" दिया हुआ हैं।

यूहन्ना 13:18 **जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूं**
यूहन्ना 10:14 **मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं** ... - और दूसरों को - ... **मैं ने तुम को कभी नहीं जाना।**

यूहन्ना 17:2 क्योंकि तू ने उस का सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें **तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे**। उसके सब, स्वर्ग में होंगे। ("पूरा हुआ", यूहन्ना 19:30)

यूहन्ना 17:6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया **जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे** (इफि 1:4-6) और **तू ने उन्हें मुझे दिया** और **उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया है।**

यूहन्ना 17:9 मैं उन के लिये विनती करता हूं, **संसार के लिये विनती नहीं करता हूं** परन्तु **उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है**, क्योंकि **वे तेरे हैं**। निश्चय ही यह कहा जा रहा है कि इस पृथ्वी पर दो प्रकार के लोग हैं।

यूहन्ना 17:12 जब मै उन के साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ **उन में से काई नाश न हुआ**, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।

यूहन्ना 17:14 मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और **संसार ने उन से बैर किया**, क्योंकि **जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं**। उसके लोगों का मूल "ऊपर से" है, पूर्व निर्धारित, प्रतिज्ञा किए हुए, चुने हुए।

यूहन्ना 17:16 जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही **वे भी संसार के नहीं।**

यूहन्ना 17:24 हे पिता, मै। चाहता हूं कि **जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों** कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा।

आमीन

इफिसियों 1:5-10 और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये **पहले से** ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, (6) कि **उसके उस अनुग्रह की महिमा** की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्रिय में सेंत मेंत दिया। (7) हम को उस में उसके लहू के द्वारा **छुटकारा,** अर्थात् अपराधों की **क्षमा,** उसके उस **अनुग्रह के धन के** अनुसार मिला है। (8) जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। (9) कि उस ने अपनी **इच्छा का भेद** उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। .... (11) उसी में जिस में **हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने।**